प्रस्तुतकत्री- डॉ. गायत्री सिंह (अतिथि प्राध्यापिका)

हिन्दी-विभाग, आर. डी. एस. कॉलेज, मुजफ्फरपुर।

स्नातक(प्रतिष्ठा), खण्ड-।। (General & Subsidiary)

प्रेमचंद विरचित 'गबन' उपन्यास से 'जोहरा' का चरित्र-चित्रण-

'जोहरा' उपन्यासकार प्रेमचन्द द्वारा लिखित 'गबन' उपन्यास की एक महत्वपूर्ण नारी पात्र है। एक सामान्य पात्र होते हुए भी वाह उपन्यास में अपना विशिष्ट स्थान बनाने में सफल होती है।वह एक वैश्या है जो पुलिस द्वारा रामनाथ को भुलाये रखने जालपा से विमुख करने के लिए रखी जाती है। किंतु वेश्या होती हुई उसमें नारीत्व है। जालपा का त्याग और उसका सेवा का आदर्श उसके जीवन में ऐसा परिवर्तन लाता है कि वह एक आदर्श चरित्र के रूप में प्रस्तुत होती है।

एक वेश्या होने के कारण सर्वप्रथम रामनाथ के प्रति जोहरा का प्रेम बनावटी रहता है पर रामनाथ की सरलता के प्रति आकृष्ट होने पर उसका प्रेम सच्ची प्रेम में तब्दील हो जाता है।वह रामनाथ की शुभचिंतक ही बन जाती है। वह उसे जालपा से मिलाने का उत्तरदायित्व स्वयं कर लेती है। दिनेश के परिवार की सेवा में लगी जालपा को देख उसके आदर्श से प्रभावित हुए बिना वह नहीं रहती है। जोहरा जालपा से

प्रभावित ही नहीं होती अभी तो उसकी सहायिका बनकर दरोगा को चकमा देकर रामनाथ को बचाती भी है।

जोहरा को अपने आप के प्रति,अपने वर्तमान के प्रति तभी घृणा होने लगती है जब वह जालपा के संपर्क में आती है। वह उससे अपनी तुलना कर लज्जित होती है। वह जालपा से कहती भी है कि "अगर इस वक्त तुम्हें मालूम हो जाए कि मैं कौन हूँ तो शायद तुम नफरत से मुँह फेर लोगी और मेरे साये से भी दूर भागोगी।"

जालपा के ही सानिध्य में रहते हुए जोहरा का जीवन सेवा और त्याग आदर्श बन जाता है।वह एक सेवव्रती नारी के रूप में अपने पूर्व पाप- कर्मों का प्रायश्चित करती हुई देवहीन के आश्रम में रतन की सेवा और परिचर्या में स्वयं को पूर्णतया समर्पित कर देती है ।

दुखिया रतन के प्रति जोहरा के हृदय में सच्ची सहानुभूति है। उसने रतन की खूब सेवा की। रतन की मृत्यु के पश्चात जोहरा उदास और एकाकी हो जाती है-" अब अकेली जोहरा का जी किसी काम में न लगता था, कभी नदी तट पर जाकर रतन को याद करती और रोती। कभी उन आम के पौधों के पास जाकर घंटों खड़ी रहती, जिन्हें उन दोनों ने लगाया था।

अंत में जोहरा बाढ़ से उफनती हुई गंगा में गोद में बच्चे को लिए एक बहती हुई स्त्री की रक्षार्थ कूद पड़ती है और अपने जीवन का अवसान होने देती है।

इस प्रकार जोहरा एक वेश्या होकर भी आदर्श नारी की ऊँचाई को प्राप्त करती है। त्याग, तपस्या और बलिदान से भरा उसका आखरी जीवन जोहरा के चरित्र को एक ऐसा उत्कर्ष देता है जो एक सेवापरायण नारी के रूप में अपनी याद छोड़ जाती है।